शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

**मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित**

**Half Yearly**

**Vol-4, Issue-2**
**15 July, 2013**

**नारी के शक्ति और सामर्थ्य को प्रतिबिम्बित करता आधुनिक संस्कृत साहित्य**

**डॉ० कौशल्या**
**सीनियर असिस्टेन्ट प्रोफेसर**
**संस्कृत विभाग कालपी**
**कालेज कालपी, जालौन**

**www.shodh.net**

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

# नारी के शक्ति और सामर्थ्य को प्रतिबिम्बित करता आधुनिक संस्कृत साहित्य

– डॉ० कौशल्या

***संस्कृत साहित्य की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। साक्षी है कि भारतीय समाज में नारी का स्थान अत्यंत गौरवपूर्ण रहा है। भारत का मध्यकालीन और वर्तमान समाज नारी की स्थिति को लेकर अनेक प्रश्नों से घिरा है। आधुनिक संस्कृत साहित्य ने नारी के किस स्वरूप की अभिव्यक्ति की हैं, प्रस्तुत शोध आलेख इस पर्यालोचन की परिणति है।***

***विषय संकेत:-*** *संस्कृत साहित्य, स्त्री लेखन, संस्कृत साहित्य में नारी छवि, स्त्री सशक्तिकरण और संस्कृत और संस्कृत साहित्य*

**ना**रि! त्वं मानवी देवता माता मानव निर्माणी[1]

'नारी जीवन की सर्जनात्मिका शक्ति है', यह कथन सर्वत्र सभी साहित्यों में एक स्वर से स्वीकार किया गया है। यह प्राचीन काल से ही काव्य का विषय रही है। साहित्य जगत ने प्राचीन एवं आधुनिक परिस्थितियों में नारी से सम्बन्धित दृष्टिकोण को समय-समय पर भिन्न-भिन्न रूप में परिमार्जित किया है। भारतीय चिंतन में नारी का विशेष स्थान रहा है। वह भारतीय समाज में पुरुषो से आगे रही है। राम, कृष्ण, शिव के नामों के पूर्व सीता, राधा, उमा स्वयं इसके प्रमाण हैं। कभी वह माँ स्वरूपा तो कभी दुष्टों आततायियों का नाश करने के लिये काली कराली का रूप धारण करती है। यदि वह दासी रूप में पति की सेवा में अपना जीवन अर्पण कर सकती है तो शासिका बन कर राज्य भी कर सकती है। तात्पर्य यह है कि नारी में असीमित शक्ति, साहस, प्रेम, दया आदि अनेक मानवीय गुण विद्यमान हैं जो उसे सर्वप्रतिष्ठित कर देते हैं। ऋग्वेद में वह वाक् देवी के रूप में स्वयं उद्घोष करती है- 'अहंराष्ट्री' मै स्वामिनी हूँ । मैं जिसे चाहती हूँ उसे ब्रह्मर्षि, विद्वान बना देती हूँ।

आधुनिक संस्कृत वाङ्गमय में भी नारी के सर्वांगीण विकास को चित्रित किया गया है। नारी प्रबुद्ध, प्रगतिशील, वीर, उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर अपने सामर्थ्य, शक्ति व बुद्धि से आगे बढ़ती हुई चतुर्दिक विजय-पताका फहरा रही है। वह अपने सर्वांगीण विकास के लिये, विश्व की मंगल कामना के लिए और समानुरूप आत्म-परीक्षण के लिये समाज और सम्पूर्ण विश्व को प्रेरित कर रही है।

आधुनिक कवि अभिराज राजेन्द्र मिश्र नारी के निर्भय एवं वीराँगना रूप के पक्षधर है। वे उसे ना तो अत्यन्त पवित्र मानते हैं और न स्वेच्छाचारी की प्रतिमूर्ति। वे उसके जीवन में दुर्बलता को कहीं भी स्थान नही देना चाहते हैं। जानकी जीवनम् महाकाव्य में विद्यत्लता के समान देदीप्यमान उनकी सीता रावण को अनेक प्रकार से फटकारती है। उनका उग्र रूप देखकर रावण जैसा महापराक्रमी वीर भी भयभीत हो उठता है। रामायण को आधार बनाकर लिखा गया महाकाव्य 'जानकी जीवनम्' में कवि ने अपने मौलिक प्रतिभा से सीता के चरित्र को सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाकर उसके शक्ति और सामर्थ्य को रेखांकित कर नारी के चरित्र को एक नया आयाम दिया है। राम द्वारा रावण की लंका में बन्द सीता को पत्नी रूप में अस्वीकार करने पर सीता के स्वाभिमान को चोट पहुँचती है और वह स्वयं अग्नि-परीक्षा देने के लिये तत्पर हो जाती है। जहाँ वाल्मीकि और कालिदास कृत रचनाओं में सीता चुपचाप अपना अपमान सहन कर लेती हैं, वहीं मिश्र जी की जानकी अपने साथ हो रहे अन्याय का अहसास दिलाती हैं। वे स्त्री का अपमान करने में राम और रावण को समतुल्य बताती है।

प्रो0 राजेन्द्र मिश्र जानकी पर हो रहे अत्याचार के माध्यम से सम्पूर्ण निर्दोष नारी वर्ग पर हो रहे अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाते हैं। वे नारी को केवल भोग्या समझने वालों को कस कर फटकार लगाते है।

प्रो0 मिश्र की अन्य कथा 'शतपर्विका' नारी को दूर्वाघास के समान बताती है। जो निरन्तर अनेक झंझावातों, कष्टों को सहकर भी पैरों तले रौंदी जाने पर भी अपनी शक्ति से सामर्थ्य से फिर सिर उठाकर स्वाभिमान से भरे रगों में प्रफुल्लित हो उठती है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
**मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित**

**Half Yearly**
**Vol-4, Issue-2**
**15 July, 2013**

**नारी के शक्ति और सामर्थ्य को प्रतिबिम्बित करता आधुनिक संस्कृत साहित्य**

**डॉ० कौशल्या**
**सीनियर असिस्टेन्ट प्रोफेसर संस्कृत विभाग कालपी कालेज कालपी, जालौन**

**www.shodh.net**

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

'सौभाग्यवति! शतपर्विका इव मे तनूजा:। यथा हरितवर्णा शतपर्विका गृहद्वारा सुषमा वर्धयति, शयने तूलास्तरणसाम्य दधती सौख्यं जनयति स्वनवनवा कुरै पशु-पक्षिण: प्रीणयति आत्माराम, तयाडपोषिताडपि अनमिषिक्ताडति अरक्षितडपि स्वास्ष्टबलेनेव पुनर्नवतामुपैति नित्यहरिता च संलक्ष्यते तथैव पुत्रयोडपि में वर्तन्ते।'[2]

प्रो0 रेवा प्रसाद द्विवेदी कृत महाकाव्य 'सीता चरित्र' में सीता अबला या करूणा की पात्र है क्योंकि महामुनियों के शोणित से उसे ओजस् की प्राप्ति हुई।[3] 'सीता चरितम्' महाकाव्य स्वातंत्र्योत्तर संस्कृत साहित्य की एक उपलब्धिपूर्ण रचना है, जिसमें सीता को राष्ट्रदेव के चरित्र से सम्भूषित किया गया है। सीता अपने सम्बन्ध में लोक निन्दा को लेकर विलाप करने वाले परिजनों के बीच परित्याग के निर्णय को कहने में असमर्थ राम की मन: स्थिति को जानकर स्वंय वन जाने का निर्णय सुनाती है।

यामि मातर:इत: स्वतस्ततो, यामि विपिनं नमे व्यथा।

कीर्तिकाय सुभानुषा मृत्युतोडपि न ही जातु विम्यति।।[4]

प्रो0 रेवा प्रसाद द्विवेदी के महाकाव्य 'स्वातंत्र्यसम्भवम्' में रानी लक्ष्मीबाई को प्रथम स्वातंत्र्य लक्ष्मी कहा गया है। वह तेजस्विता वीरता, शक्ति-सम्पन्न, मानसिक दृढ़ता, उत्साह सभी में असाधारण थी। स्वतंत्रता-आंदोलन में भाग लेने वाली लक्ष्मीबाई और इन्दिरा गाँधी के स्वातंत्र्य सम्भवरूपी त्रिदशपगा गंगा की तटयुगी से परिवेष्टित किया है।

कवि रामावतार मिश्र ने अपने महाकाव्य 'श्री देवी चरितम्' में आदि शक्ति जगज्जननं को सौम्य आकृतियों वाली स्त्रियों में सर्वश्रेष्ठ माना है और कहा है कि सौन्दर्य तुम्हारे अधीन है। यहाँ शक्ति रूपी नारी को सौन्दर्य की देवी व शक्ति की अधिष्ठात्री के रूप में वर्णन किया है-

सौम्याकृतीना त्वमतीव सौम्या त्वत्त: पर सौम्यता न लोके

सौम्यत्वमेवास्ति तवाश्रितं यत् कथ व तादृग्भवसि त्वमेव।[5]

कवि सुबोध चन्द्र पन्त का 22 सर्गो में लिखा महाकाव्य 'झाँसीश्वरी चरितं' में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, जिनका नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ज्ञात प्रथम नारी के रूप में अंकित को दुर्गा के अवतार के रूप में चित्रित किया गया है-

दुर्गेव नारी जन इत्चवोचल्लोकस्य नेत्रे उदमीमिलच।

यद विस्मितोऽभूद विस्मायोडपिचके समस्तं तदकृष्ठपूर्वम्।।[6]

बैदेही चरित के रचनाकार कवि रामचन्द्र मिश्र ने सीता के विषय में वर्णन किया है कि वह कोई सामान्य नारी नहीं है। वह वीर कन्या है। वीर श्रेष्ठ की पत्नी है। वीर की पुत्रवधू और स्वयं हृदय से धीर है-

वीरात्मजा वीरवस्य जाया वीरस्नुषा स्वेन हदा च वीरा

वीरें सुतें भाविनि बद्ध भावा सा कातरत्वं नमनस्ययासीत।।[7]

वैश्विक परिदृश्य में नारी पुरुषों के समकक्ष खड़ी है। अब वह अपने अधिकारों की याचना नही करती, अपितु दृढ़ता से अपनी स्वतंत्रता का विगुल बजा रही है। संस्कृत रचनाकारों ने प्राचीन से लेकर अर्वाचीन काल तक नारी के विविध परिवर्तित रूपों पर अपनी लेखनी चलायी है। उसके बदलते प्रतिमानों पर अपनी गहरी दृष्टि रखी है। और नारी के विविध रूपों पर अनेक सलझे-अनसुलझे सवाल छोड़ें हैं। विश्व की प्रत्येक महत्त्वपूर्ण घटनाओं और प्रत्येक काव्य सर्जना के पीछे नारी एक सशक्त घटक के रूप में उपस्थित रही है।

आधुनिक काल के संस्कृत साहित्य के कवि वनमाली विस्वाल ने अपने काव्य में नारी के अन्तर्द्वन्द का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया है। विस्वाल जी के अनुसार नारी भले ही आधुनिक काल में 'वैलेन्टाइन डे' की प्रिया हो या प्राचीन प्रियतम की प्रेयसी, वह भोग की वस्तु नहीं, बल्कि अपने सशक्त चरित्र के माध्यम से समाज में एक महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में उभरी है। महाभारत युद्ध का कारण जहाँ द्रौपदी थी, वही रामायण की रचना का कारण सीता थी। नारी के बदलते प्रतिमानों पर विस्वाल जी की कविता द्रष्टव्य है-

मद् दुर्गते: हेतूरसि त्वमप्यकारणम्त्वं विवशा स्वमावस्या महतीदुर्दशाकिंतु

म..शस्य अतिसंवेद्यस्य पाञ्जति: अग्नि परिक्षाया:पुन:

प्रमाणित: सीताया: सतीत्वम्

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
**मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित**

**Half Yearly**
**Vol-4, Issue-2**
**15 July, 2013**

**नारी के शक्ति और सामर्थ्य को प्रतिबिम्बित करता आधुनिक संस्कृत साहित्य**

**डॉ० कौशल्या**
**सीनियर असिस्टेन्ट प्रोफेसर संस्कृत विभाग कालपी कालेज कालपी, जालौन**

**www.shodh.net**

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

अद्य किन्तु स्थितिर्भिन्ना द्रौपाद्यास्तत्केशपाशो
दु: शासनोमण्डयति स्नेहात् पुष्प गुच्छं
हसन्ती सा प्रतिदाने वदति द्रौपदी थैंक्यू इति।
अद्य सीता: त्वत्स.शा: स्वसतीत्वं प्रमाणार्थ खादितुं विवशा:
गर्भ निरोध कास्ता: गोलिका:।[8]

विस्वाल जी की कविता में नारी को पवित्र रूप में स्वीकार किया गया है वे नारी के संस्कारित स्वरूप के पक्षधर हैं।

विदेशे सुदूरे स्थित्वा
यहाडहं श्रुणोमिप्रिये! शुभशैखनादम्
तदाडहं स्मरामि
वधु वेशे त्वया प्रस्थापित तुलसी-मूलस्थप्रिय सन्ध्यादीपम।[9]

आधुनिक संस्कृत साहित्य में नारी के विविध रूपों का चित्रण है। संस्कृत कथा साहित्य में उसके उदात्त आचरण का वर्णन किया गया है। 'ननान्दा पुत्र-वधू' प्रकाशमित्र शास्त्री द्वारा लिखित कथा है जिसके माध्यम से वैवाहिक जीवन में समन्वय बनाने में नारी चरित्र के सामर्थ्य का वर्णन किया गया है। इन्ही की दूसरी कथा 'वन्दना' में एक सखी अपनी दूसरी सखी की प्रसन्नता के लिये प्रतियोगिता में पराजित हो जाती है। मैत्री एवं उदारता का यह विलक्षण उदाहरण सहृदय को झंकृत कर देता है।

डॉ0 रामकरण शर्मा के उपन्यास 'सीमा' की नायिका 'कमला' प्रत्येक नागरिक को अपराध की मनोवृत्ति से स्वत: दूर रहने का मार्ग प्रशस्त करती है।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र की कथा शतपर्विका में जहाँ एक ओर पुत्रियाँ कन्या होने के नाते पिता की घृणा की पात्र हैं, वहीं पिता की अनथक सेवा कर पुत्र से भी गुरूतर भार वहनकर पिता की सहानुभूति अर्जित कर लेती हैं। कथा की नायिका रमा के स्वभाव में दृढ़ता है। पिता द्वारा डाँटे जाने पर वह तुरन्त निश्चय करती है कि पत्थर में भी आग होती है तो मेरे पिता के मन में मेरे प्रति वात्सल्य क्यो नहीं होगा? मैं उसे अवश्य प्रकट करूँगी चाहे इस प्रयत्न से मेरे प्राण ही क्यों न चले जायें-

पाषाणेडपि राजतेडग्नि:। अस्मत् पितुमानसेडपि वात्सल्येनावश्यमेव भवितव्यम्।
यदि प्रयत्नेडस्मिन् प्राणाअपि में विनश्यन्ति तर्हि न कापि चिन्ता ।[10]

इस प्रकार आधुनिक संस्कृत वाङगमय में इस समय की परिस्थितियों के अनुकूल नारी के सुकोमल चरित्र के साथ-साथ उसकी दृढ़ता, विद्वत्त, आत्मबल, आर्थिक स्वतंत्रता आदि गुणों का भी सम्यक चित्रण किया गया है, यह दिखाया गया है कि जीवन की विषम परिस्थितियों का सामना करने में वे पुरुषों से पीछे कदापि नहीं हैं।

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर इन्द्रमोहन सिंह ने मुक्त छन्द शैली में श्रृंगार के आधुनिक प्रसंगों को व्यक्त किया है। कालेज या विश्वविद्यालय जाने वाली युवती का चित्रण करते हुये उन्होनें लिखा है:-

'चलापा ग बाणैर्युवकानधनती, कुसुमचापयश्टिरिव तनुमधया क्षीबा सोमलतेव, नन्दनवन पवन चालितेव, आगच्छति विश्वविद्यालय युवति:

इनका प्रेम विषयक वर्णन भी दर्शनीय है:-

प्रियेत्वं ।
तिमिरे किरणवत
नीरदेशु गृहविहीनेशु खिन्नेशु
त्वं विद्युत प्राणमयी
विरहानले कठिने
त्वं मिलनगीतिका रम्या[11]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

नारी के शक्ति और सामर्थ्य को प्रतिबिम्बित करता आधुनिक संस्कृत साहित्य

डॉ० कौशल्या
सीनियर असिस्टेन्ट प्रोफेसर संस्कृत विभाग कालपी कालेज कालपी, जालौन

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

21वीं शदी के समाज ने जहाँ एक ओर उन्नति व विकास के अनेक द्वार खोले हैं, वही बलात्कार, दहेज, स्त्री-मर्यादा को तार तार करना, भ्रष्टाचार अशिक्षा आदि कारकों से मानव के चरित्र का पतन भी हो रहा है । पं0 रमाकान्त शुक्ल ने अपनी रचना 'जय भारत भूमे' में इन समस्याओं को रेखांकित करते हुये यह आशा व्यक्त की है कि ये सारे दोष एक दिन अवश्य समाप्त होंगे:-

'बलात्कार-हत्यापहार-प्रहारा:
अशिक्षा अबधूदाह भिक्षा प्रचारा:
कदाचित, लुप्तों: भविष्यन्ति यस्मात:
(अवश्यं विलुप्ता भविश्यन्ति यस्मात्)[12]

कविवर वागीश शास्त्री ने- दहेज जैसी विकराल समस्या को भी हास्य व्यंग्य की फुलझड़ियों के साथ प्रस्तुत किया है।

पुत्र विवाहयित्वा च कष्चित्प्रत्यागतो जन:
प्राहुस्तत् सुहृदस्तं भो:। किं वृत्तं वद मित्रन:
कि वदानिसरवायों वो दण्डितोडहं सतं खलु।
कारावासष्च पुत्रस्य आजन्म समजायत[13]

वस्तुत: किसी भी राष्ट्र के निर्माण एवं संवर्द्धन में नारी का योगदान सर्वोपरि होता है। किसी भी राष्ट्र का सांस्कृतिक विकास एवं उसके उत्कर्ष की आधारशिला वहाँ की नारी की सामाजिक स्थिति एवं चेतनाशक्ति पर आधारित होती है। नारी की मर्यादा राष्ट्र को परिपुष्ट करने वाली तथा कभी न क्षीण होने वाली संस्कृति का निर्माण करने में सक्षम होती है। आधुनिक नारी जीवन के विविध क्षेत्रों यथा-शिक्षा, व्यापार, देश की राजनीति, देशसेवा, डॉक्टर, इन्जीनियर, बैंकिंग, एन0जी0ओ0 आदि सभी क्षेत्रों में अपनी कामयाबी का झण्डा बुलन्द कर रही है। डॉ0 प्रशस्थ मित्र शास्त्री कृत कथा संग्रह 'अनमीप्सितम' में संघर्षरत नारी के विविध पक्षों को अत्यन्त संवेदना के साथ चित्रित किया गया है। अमृतास्मृति: कथा में नायिका अपने स्वर्गीय पति की स्मृति में कैंसर एसोशियेशन की स्थापना के लिए जून मास, की तपती गरमी में घर-घर जाकर टिकट बेचने का कार्य करती है-

वयं कैन्सरपीड़िताना-सहायतार्थम-एवा पत्रकाणा विक्रयण कुर्म:।[14]

वह क्रान्तिकारी विचारों वाली भी है। दृढ़ संकल्प उस युवती की विशेषता है- 'तथैव, दुराग्रह पूर्ण:स्वभाव: उददण्डताधोतक जीवन शैली, स्वाभिमान समन्बित चिन्तन च स्पष्टमेव परिलक्ष्यतें।[15] अनभीप्सितं कथा पाश्चात्य जीवन शैली को अपनाने वाली नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय संस्कृति की मान्यताओं को त्याग कर पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण करने वाली नारी अपने को एकदम बदल लेती है-'परन्तु मम जननी सम्भवत: एतत सुनिश्चित मन्यते यत श्री चन्द्रकान्तों मा स्वीकरिश्यति एवंतत्र रूचे: किमपि कारणमेव नमिूत, यतो हि अहम अत्यन्त अभिरूपताया सुदर्शना आकर्शक गात्रयष्टि: शिक्षिता गौरवर्णा चकन्यका अस्मि।'[16] विवशता कथा भी पाश्चात्य देश में रहने वाली एक ऐसी भारतीय नारी को प्रतिबिम्बत करती है जो अपने वृद्व श्वसुर को छोड़कर जर्मनी में जाकर नौकरी करती है और उनके अन्तिम समय की सूचना पाकर भी भारत आने के लिए तैयार नही होती-'अहं किं करिश्दामि तंत्र गत्वा.....त्वमेव तत्र एका की प्रयाहि[17]। इन्ही की एक कथा 'प्रचण्ड प्रतीक्षा' की नायिका वैशाली में भारतीय संस्कृति व उसके संस्कार भरे पड़े है। उच्च शिक्षा के लिए विदेश गये पति के वापस आने की प्रतीक्षा में उसका जीवन व्यतीत हो जाता है। उसके विदेशी पत्नी से उत्पन्न पुत्र को अपने ममता की छाया प्रदान करने वाली अदभुत नारी है जो अपने पति के समस्त अपराध को क्षमा कर देती है और अनन्य पति भक्ति के कारण अतुलनीय बन जाती है।[18]

अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में न केवल नारी की शक्ति सामर्थ्य का ओजपूर्ण चित्रण किया गया है। बल्कि आधुनिक संस्कृत काव्य को महिला कवयित्रियों ने भी अपनी लेखनी से तीखी धार दी है। शीला, भट्टारिक, देवकुमारिका, गंगादेवी, मधुरवाणी जहाँ 17वीं शताब्दी में प्रख्यात कवयित्रियाँ थी वहीं 20वीं एवं 21वीं शताब्दी में भी अनेक प्रख्यात महिला रचनाकार हुई हैं। विज्जिका, लक्ष्मी, मोरिका, इन्दुलेखा के साथ-साथ डॉ0 पुष्पा दीक्षित डॉ0 मिथिलेश कुमारी मिश्रा, डॉ0 रत्ना वसू, डॉ0 जय श्री भट्टाचार्य आदि अपनी लेखनी से संस्कृत साहित्य को समुन्नत करती हुई अपनी शक्ति और बुद्धि का प्रसारण सम्पूर्ण विश्व में कर रही हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

नारी के शक्ति और सामर्थ्य को प्रतिबिम्बित करता आधुनिक संस्कृत साहित्य

डॉ० कौशल्या
सीनियर असिस्टेन्ट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग कालपी
कालेज कालपी, जालौन

www.shodh.net

*Web Portal of Humanity & Social Science Research*

**संदर्भ :-**

1. जानकी जीवनम्, राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1988, सर्ग1, श्लोक 72
2. इक्षुगन्धा कथा संग्रह, प्रो0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद, 1986, पृष्ठ 72
3. 3-सीता चरितम्, प्रो0 रेवा प्रसाद द्विवेदी, संस्कृत परिषद, डॉ0 हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, संस्करण 1960, सर्ग 3, श्लोक 46
4. सीता चरितम्, प्रो0 रेवा प्रसाद द्विवेदी, संस्कृत परिषद, डॉ0 हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, संस्करण 1960, सर्ग 3, श्लोक 31
5. श्री देवी चरितम्, रामावतार मिश्र, रुक्मिणी प्रकाशन, इन्द्रपुरी राँची, संस्करण 1982, सर्ग 1, श्लोक 58 ।
6. झाँसीश्वरी चरितम्, सुबोध चन्द्र पन्त, गंगानाथ झाँ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद, संस्करण 1979, सर्ग 1, श्लोक 27।
7. वैदेही चरितम्, रामचन्द्र मिश्र, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, संस्करण 1985, सर्ग 8, श्लोक 43 ।
8. ऋतुपर्णा, वनमाली विस्वाल, दृग् भारती, त्रैमासिक इलाहाबाद
9. प्रियतमा, वनमाली विस्वाल, दृग् भारती त्रैमासिक इलाहाबाद
10. 'इक्षुगन्धा' कथा संग्रह में प्रकाशित कहानी 'शतपर्विका'-प्रो0 राजेन्द्र मिश्र, बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986
11. हिरण्यरश्मि-इन्द्रमोहन सिंह, दीप प्रकाशन, पटियाला, 1988
12. जय भारत भूमे-रमाकान्त शुक्ल, देववाणी परिषद, नई दिल्ली, 1981
13. नर्मसप्तशती-पं0 वागीश, वाग्योग चेतना पीठ, वाराणसी, 1984
14. अनभीप्सितम्-डॉ0 प्रशस्य मित्र शास्त्री
15. वही,
16. वही,
17. वही,
18. वही

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN